भारतीय नारी एवं नारीवाद

विनय प्रकाश दुबे*

नर एवं नारी दोनों पर संयुक्त रूप से अपनी प्रजाति को प्रकृति में स्थापित रखने का दायित्व होता है। इसमें कोई किसी से महत्व या गुणों के आधार पर कम नहीं है परन्तु जैव विविधता के आधार पर इन्हें दो भागों में बॉटा गया है तथा एक को नर तथा दूसरे को मादा कहा गया है। यह भिन्नता प्रकृति ने प्रत्येक प्रजातियों के लिए की है। जैसे प्रत्येक जीव चाहे पौधे हों या जन्तु सभी की एक निश्चित प्रजाति में गुणसूत्रों की संख्या निश्चित होती है परन्तु नर एवं मादा में केवल अंतिम गुण सूत्र का जोड़ा भिन्न होता है जो जैव विविधता का प्रमाण है। अतः नर एवं नारी या नर एवं मादा में भिन्नता प्राकृतिक एवं जैविक है परन्तु असमानता एक दृष्टिकोण है जो समय परिस्थिति एवं समाज के अनुसार होता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री आंद्रेवेते का निम्नलिखित कथन इस संदर्भ में प्रासंगिक है–''प्रकृति हमें केवल अंतरों एवं क्षमता मूलक अंतरों के साथ प्रस्तुत करती है। मनुष्यों में यह अंतर तब तक गैर बराबरी का रूप नहीं लेते जब तक कि उन्हें प्रक्रियाओं द्वारा जो कि सांस्कृतिक है न कि प्राकृतिक चुना, मूल्यांकित एवं चिन्हित नहीं किया जाता। दूसरे शब्दों में अंतर केवल मानकों के लागू किये जाने पर ही गैरबराबरी बनते हैं। एक सामाजिक संदर्भ में गैरबराबरी के बारे में बात करते हुए जिस मानक से रूबरू होते हैं वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त नहीं विशिष्ट मनुष्यों द्वारा विशिष्ट ऐतिहासिक स्थितियों में सांस्कृतिक रूप से निर्मित की जाती है।'' स्टूअर्ट मील की दूरदृष्टि ने ठीक ही पहचाना था कि पृथ्वी पर एक बेहतर जिन्दगी के मानवीय संघर्ष में स्त्रियों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता एक प्रमुख और बहुत महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए इस संबंध में पुरूषों के खोखल भय केवल स्त्रियों को नहीं, बल्कि पूरी मानवता को ही बंधनग्रस्त किये है क्योंकि मानवीय प्रसन्नता के आधे झरने के सूखने से पूरे वातावरण के स्वास्थ्य सम्पन्नता एवं सौन्दर्य पर प्रभाव पड़ता है। प्रकृति ने नारी को भावात्मक, रचनात्मक एवं विचारात्मक कोमलता प्रदान की है। यह प्रकृति का सुन्दरता मानव एवं मानवता का रूप है। नारी के व्यवहार के सबंध में कहा गया है कि नारी बिल्कुल उस जल के समान है जो अति शीतल, तरल एवं जीवनोपयोगी है तथा किसी भी सुख–दुख एवं जीवन की कठिनाइयों को आसानी से अपने अंदर समाहित करते हुए एक साम्यभाव पैदा करती है तथा कुछ परिस्थितियों में जल में उठने वाली लहरों के समान प्रबल हो जाती है जो किसी भी भौतिक वस्तु एवं भौतिकता का विनाश करने के लिए पर्याप्त है।

भारतीय नारी

भारतीय दर्शन के अनुसार नारी को जगत जननी कहा गया है तथा इसका स्थान स्वर्ग से भी बढ़कर माना गया है। जैसे– जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। स्त्री के विषय में

* पी0जी0टी0, रसायन विज्ञान, जवाहर नवोदय विद्यालय, गाजीपुर (उ0प्र0)।

वृन्दावन लाल वर्मा ने वर्णन किया है कि स्त्री का गौरव सौन्दर्य महत्व स्थिरता में है। जैसे उस नदी का जो बरसात के मटमैले तेज प्रवाह के बाद शरद में नीले जल वाली मंथर गति गामिनी हो जाती है। दूर से बिल्कुल स्थिर और शांत बहुत पास से प्रगतिशील। भारतीय संदर्भ में नारी को देवी का स्थान प्राप्त है तथा कहा गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यह वह शक्ति है जो नर को नरायण बना देती है। सम्पूर्ण जगत में नारी का रूप लगभग एक सा ही है तथा उसका रूप वहाँ की सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप प्रदर्शित किया गया है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के अनुसार नारी को कई रूपों में अलग–अलग अवस्थाओं में माता, बहन, स्त्री, जीवन संगिनी इत्यादि रूपों में परिभाषित किया गया है। माता को प्रत्येक बच्चे का पहला गुरू माना गया है तथा इसकी रक्षा एवं सेवा करना परम धर्म बतलाया गया है। यह मानव सभ्यता की जननी है तथा इसका स्थान सर्वोच्च है। स्त्री मन को हमारे साहित्यों में कोमल हृदय एवं अस्थिर चित्त वाली माना गया है। इसलिए चाणक्य सूत्र में भी स्त्री को राजनीतिक एवं अन्य कूटनीतिक कार्यों से अलग रखा गया है। इसको कोमल हृदय वाली, अबला एवं ममता का रूप बताया गया है। मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों में नारी के इसी रूप का वर्णन किया गया है–अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी। परन्तु क्या आज भी ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं कि नहीं इस विषय में महापुरूषों के विचार जानना आवश्यक है। आधुनिक संदर्भ में नारी की सफलता इस बात की द्योतक है कि नारी के संबंध में अवधारणायें, परिकल्पनायें तथा मान्यतायें पूर्ण रूप से सत्य नहीं हैं तथा नारी विकास की कड़ी भी है और विकास की धुरी भी है। आज नारी पूर्णरूप से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। इससे यह कहा जा सकता है कि किसी देश की नारी का विकास ही सच्चे मायने में उस देश की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास है तथा मानव समाज की कोई अवधारणा इसके बिना अधूरी है। हमारे देश की लगभग आधी जनसंख्या स्त्रियों की है। अतः उनकी सर्वांगीण उन्नति के बिना भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मानव जितनी बुराइयों के लिए जिम्मेदार है उनमें सबसे ज्यादा घटिया, वीभत्स एवं पाशविक बुराई मानवता के अर्धाग अर्थात नारी जाति का दुरूपयोग है। नारी के विषय में महात्मा गांधी के विचार भी काफ़ी स्पष्ट थे। उनके अनुसार मनुष्य होने के नाते नारी और पुरूष की मूल समस्यायें तथा आवश्यकतायें समान हैं। वे समान रूप से सुख–दुख तथा सभी मूल संवेगों एवं भावनाओं का अनुभव करते हैं। इस दृष्टि से स्त्री पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं। वे एक दूसरे सक्रिय सहयोग के बिना जीवित नहीं रह सकते। गांधी जी नारी को पुरूष की अपेक्षा निम्न अथवा निकृष्ट समझना बहुत ही निंदनीय मानते हैं। युगों से पुरूष स्त्री को अपने अधीन तथा अपने सुख का साधन मात्र समझता रहा है। भौतिक वस्तुओं की भाँति स्त्री को उसने अपनी सम्पत्ति मान लिया है जिसका वह अपनी इच्छानुसार उपभोग कर स[illegible] पुरूष के इस स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण को स्वीकार कर लेने के कारण स्वयं स्त्री में भी [illegible] की भावना उत्पन्न हो गयी है और वह अपनेआप को पुरूष की अपेक्षा हीन समझने [illegible] को इस आत्महीनता की भावना से मुक्त होना अत्यंत आवश्यक है। गांधी जी ने [illegible]

पुरूष के सुख का साधन नहीं अपितु एक महान सामाजिक कर्तव्य बताया है जिसकी पूर्ति आत्मसंयम द्वारा ही संभव है। हिन्दू धर्म में विवाह चार आश्रमों में से एक है। वस्तुतः तीनों आश्रम इसी पर आधारित हैं। स्पष्ट है कि बालक बालिकाओं द्वारा इस कठिन उत्तरदायित्व का निर्वहन करना संभव नहीं है इसीलिए उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया। गाँधी जी ने दहेज प्रथा दक्षिण भारत में विकसित देवदासी प्रथा का सशक्त विरोध किया तथा इनके विरूद्ध अपना तर्क प्रस्तुत किया।

भारतीय नारीवाद

पहले के स्त्री केन्द्रित चिंतन एवं आज के नारीवाद के बीच बुनियादी फर्क यह है कि पहले स्त्री पुरूष के बीच मौजूदा सामाजिक अंतर को प्राकृतिक मान लिया जाता था। नतीजतन सबल पक्ष से निर्बल पक्ष पर दया करने या उन्हें कुछ सुविधाएँ दे देने की अपील की जाती थी। इसके उलट नारीवाद महिलाओं को एक राजनीतिक कोटि मानता है। यानि उनकी समस्याओं का संबंध सत्ता एवं सामाजिक संरचना से है। अतः अब सवाल उनकी स्थिति में सुधार तथा परिष्कार करने का नहीं बल्कि मूलतः अधिकारों का है। इस फर्क को पहचानते हुए रेखा कश्तावर ने लिखा है कि "नारीवाद नारी जीवन के अनछुए अनजाने पीड़ा जगत के उद्घाटन के अवसर उपलब्ध कराता है। परन्तु इसका उद्देश्य साहित्य एवं जीवन में स्त्री के दोयम दर्जे की स्थिति पर आँसू बहाने और यथास्थिति को बनाये रखने के स्थान पर उन कारकों की खोज से है जो इस स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। वह स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है। नारीवाद स्त्रियों के लिए उसी प्रकार अनुकूल है जिसप्रकार मार्क्सवाद सर्वहारा के लिए है। वृंदा करात के अनुसार नारीवाद एक विचारधारा है, एक दृष्टिकोण है तथा स्त्री शोषण के खिलाफ एक संघर्ष है। भारत में नारीवाद प्राचीन समय से ही काफी महत्वपूर्ण रहा है तथा नारी को समाज के उत्थान एवं संस्कृति को बचाए रखने का मुख्य कारक माना है। इसी क्रम में नारियों की स्थिति का कालक्रमानुसार वर्णन निम्नवत है–

आदिकाल की महिलाएँ – शतरूपा स्वयंभू मनु की पत्नी तथा बृहदारण्यक उपनिषद् में मनुष्य व सैकड़ों प्रकार के जीवों की उत्पत्ति इन्हीं से बताई जाती है। सर्वप्रथम शतरूपा ने सैकड़ों रूप धारण कर अपने को मनु की दृष्टि से छिपाने का प्रयास किया परन्तु हर रूप में मनु ने पहचान लिया तथा प्रत्येक रूप में एक सन्तान की उत्पत्ति की तथा सैकड़ों रूप धारण करने के कारण इन्हें शतरूपा कहा जाता है। इसी प्रकार सावित्री, सती, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा आदि नारी रूप ने विश्व का कल्याण किया।

इस काल में महिलाओं की शिक्षा का यथेष्ट प्रचार था स्त्रियाँ वेदाध्ययन करती थीं और मंत्रों की रचना भी करती थीं। ऋग्वेद में अनेक सूत्रों की रचना स्त्रियों ने की। प्रमुख ऋग्वैदिक कालीन स्त्रियों में प्रमुखतः अदिति (महर्षि कश्यप की पत्नी) तथा ऋग्वेद में धावा एवं पृथ्वी का वर्णन भी देवी के रूप में किया गया है। सीता, उषा, ऋग्वेद में उषा देवी का प्रायः 300 बार

उल्लेख है। लैटिन भाषी उषा को मिर्नवा कहते हैं यूनानी में उषा की कई कहानियाँ वर्णित हैं तथा वे उषा के पूरे भक्त हैं। सूर्या, शची, श्रद्धा, इला, विष्पला आदि स्त्रियाँ मंत्र द्रष्टा रही हैं।

उपनिषदों के विकास में स्त्रियों का काफी योगदान रहा है। गार्गी, मदालसा आदि स्त्रियाँ उपनिषदों की व्याख्याता रही हैं।

रामायण काल की सीता, कौशल्या, सुमित्रा, मंथरा, कैकेयी आदि के उल्लेख हैं तथा महाभारत काल में द्रोपदी, गांधारी, कुन्ती, माद्री आदि के उल्लेख हैं। इन सभी कालों में स्त्री का स्थान महत्वपूर्ण था तथा समाज में उनका उचित सम्मान भी था।

जैन धर्म में भी स्त्री को उचित स्थान एवं सम्मान प्राप्त था तथा नारी धर्मिक एवं सामाजिक कार्यो में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। ये भी ज्ञान प्राप्त कर समाज में ज्ञान का संदेश देने हेतु जैन धर्म स्वीकार कर भिक्षुण बनीं तथा उन्होंने भी महावीर की भाँति केवल्य ज्ञान की प्राप्ति की। इस काल की महान नारियों में मृगावती, चंदना (चन्दनबाला) आदि के नाम प्रमुख हैं। इस प्रकार इस समय में भी स्त्रियाँ गुणवती थीं तथा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में उनका योगदान महत्वपूर्ण था।

बौद्ध साहित्य में भी भिक्षुणी खेमा का उदाहरण मिलता है जो अपने समय की अत्यन्त विदुषी स्त्री थी। इसी काल में पाणिनी की माता दाक्षी, गौतम बुद्ध की माता महामाया (माया देवी), महाप्रजापति गौतमी–गौतम बुद्ध की मौसी इन्होंने गृहस्थ जीवन त्यागकर सन्यासाश्रम में प्रवेश लिया था तथा बौद्ध भिक्षुणी बन गयी थीं। इस प्रकार बौद्ध काल में भी महिलाओं ने समाज में ज्ञान बाँटने के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों का निर्वहन बढ़–चढ़ कर किया।

मौर्यकालीन महिलाओं में मुरा से मौर्य वंश की उत्पत्ति मानी जाती है। यह एक नीच कुल की महिला थी, संघमित्रा सम्राट अशोक की पुत्री ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था तथा धर्मोपदेश के लिए देश–विदेश की यात्राएं की तथा बौध धर्म का प्रचार प्रसार किया। इन्हें तथा महेन्द्र (भाई) को उच्च शिक्षा प्रदान की गयी। भारत के इतिहास में यह पहला अवसर था जब एक सम्राट राजा की कन्या ने सुन्दर शिक्षा दीक्षा तथा धर्मानुष्ठान के द्वारा जीवन की पूर्णता प्राप्त कर देश की नारियों को अज्ञान तथा अंधकार से मुक्त करने के लिए देश से प्रयाण किया। इन सभी तथ्यों से यह साबित होता है कि उक्त सभी कालों में राजा द्वारा महिला को शिक्षा न दिया जाना तथा उसे सामाजिक कार्यों में भाग न लेना ऐसा कोई आदेश नहीं था तथा जो भी समाज में नारियों की बुरी स्थिति का कारण था वह गरीबी एवं अशिक्षा थी जो स्वयं एक पाप है तथा इससे अभिशप्त मानव चाहे पुरूष हो या नारी उसका जीवन तथा कर्म दोनों प्रभावित होते हैं। नारियों ने अपने पीढ़ियों को बचाने का काम किया तथा बच्चों को जन्म देना एवं उनका पोषण करना उनके जिम्मे प्रकृति प्रदत्त कार्य था। इस प्रकार हर काल–क्रम में नारियों को स्थान तथा सामाजिक सहभागिता पर्याप्त थी तथा हर ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यों में उन्होंने अपने को योग्य साबित किया था।

मध्यकालीन नारियाँ–(1200ई0 से 1857ई के पूर्व तक)

भारत के इतिहास का यह कालक्रम जिसमें देश अनेक छोटी–छोटी रियासतों में बँटा था। एक राजा दूसरे के ऊपर बार–बार आक्रमण करते थे जिसमें जन–धन की काफी हानि होती थी। इस काल में महिलाओं को काफी शोषण का शिकार होना पड़ा तथा युद्ध एवं राज मोह के कारण भारत की सामाजिक एवं सास्कृतिक संरचना पर भी इसका कुप्रभाव पड़ा। अन्य देश के आक्रमणकारियों द्वारा बार–बार आक्रमण कर भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर प्रहार किया गया तथा बहुत सी कुप्रथाओं एवं शोषण का बोलबाला बढ़ा। जैसे– पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुप्रथाओं को नारी शोषण के कारण बल मिला। परन्तु इस समय में भी कई महान नारियाँ हुईं जो अपनी मिसाल इतिहास में छोड़ गयीं। जैसे–राजमाता कर्मदेवी, मेवाड़ की क्षत्राणी राजमाता जिन्होंने गोरी के आक्रमण के समय पृथ्वीराज चौहान की सहायता से स्वयं युद्ध करने की मंशा व्यक्त की थीं।

रजिया सुल्ताना, रानी पद्मिनी तथा मुगलकालीन राजपूत महिलाएँ तथा वीरांगनाएँ– इसमें चारूमती, कर्णदेवी, फूलदेवी, कर्णावती इत्यादि प्रमुख हैं।

बुंदेलखण्ड की वीरांगनाएँ– इसमें रानी पार्वती, चम्पावती (ओरछा नरेश जुझार सिंह की पत्नी), लालकुवँरि इत्यादि हैं।

मुगलकालीन बेगमें– हमीदा बानो बेगम (यह उदार एवं सहनशील स्वभाव की औरत थी। अकबर ने भी इसी के गुण आये थे। मान बाई (जहाँगीर की पत्नी), मेहरून्निसा, दिलशाज बानो बेगम, बेगम नादिरा, औरंगजेब की कवयित्री पुत्री जेबुन्निसा जिसके बारे में कहा जाता है कि पुस्तकों से इसको बहुत लगाव था, मीराबाई जो कृष्ण भक्ति की मिसाल है, रत्नावली गोस्वामी तुलसीदास की पत्नी आदि नारियों का उदय इसी काल में रहा। इन्होंने अपने कार्यों से इतिहास में अपना स्थान बनाया। इस समय में नारियों को उपभोग की वस्तु के रूप में राजाओं ने प्रयोग किया तथा जाति, धर्म आदि सभी दीवारों को लाँघकर स्त्री सौंदर्य का भरपूर शोषण किया।

आधुनिक काल (1857ई0 से 2014ई0 तक)–पुनर्जागरण के साथ ही मध्यकाल में नारी स्थिति में आये ह्रास को समाज सुधारकों ने महसूस किया तथा आधुनिक नारीवादी विचारधारा का जन्म हुआ। सतीप्रथा, बालविवाह, पर्दाप्रथा आदि रूढ़िग्रस्तता से नारी को मुक्त कराने का विचार प्रारम्भ हुआ जो तदन्तर आज के समय तक पाश्चात्य स्वछंदता की पराकाष्ठा तक पहुँचता जा रहा है। इस कालक्रम में नारियों की विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका एवं उनके कार्यों का वर्णन इस प्रकार है–

1857 के विद्रोह की वीरांगनाएँ– देवी चौधरानी(देश की प्रथम स्वतंत्रता सेनानी महिला जिसका लोहा अंग्रेजों ने भी माना था।) रानी हजरत महल (अवध की महारानी, 1857 के सैनिक विद्रोह का नेतृत्व लखनऊ में किया था) महारानी लक्ष्मीबाई (झाँसी की रानी जो अपने अदम्य

साहस एवं वीरता के कारण आधुनिक काल में दुर्गा, काली के अवतार के रूप मे अमर हो गयीं। इनके सहयोगियों में वीरांगना झलकारीबाई, जूही और मुंदर आदि महारानी की महिला सैनिकों की वीरगाथा भी अविस्मरणीय है।)

क्रांतिकारी महिलाएँ–श्रीमती लीलानाग (क्रांतिकारी विदुषी महिला, इन्हें क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेंट एक्ट के तहत 20 दिसम्बर 1931 को गिरफ्तार किया गया। अंग्रेज जेल अधीक्षक के यह पूछने पर कि वे क्रांतिकारियों के चक्कर में कैसे पड़ गयीं? उनका उत्तर था देश के प्रति अपने फर्ज के तकाजे ने ही मुझे क्रांतिकारी आंदोलन से जोड़ा है। विदुषी होने का अर्थ यह नहीं कि हमें अपने देश की भलाई की चिंता नहीं करनी चाहिए। देश मुक्ति का आंदोलन केवल अनपढ़ और जाहिल लोगों का आंदोलन नहीं है यह हर भारतवासी का आंदोलन है।)

श्रीमती रेनुका सेन, श्रीमती अमिता सेन, कल्पना दत्त, सावित्री देवी, वीणा दास(गवर्नर स्टेनले पर गोली चलाने वाली महिला) आदि प्रमुख रहीं।

सरोजनी नायडू, डॉ0 उषा मेहता, रोजालैक्जेमबर्ग (मार्क्सवादी विचारक महिला), पेट्रोवा ब्लावत्सकीः–(रूसी महिला), श्रीमती एनी बेसेन्ट (थियोसोफिकल सोसाईटी की अध्यक्ष) भगिनीनिवेदिताः– (स्वामी विवेकानन्द की विदेशी शिष्या), श्रीमती इन्दिरा गाँधी (1917–1984) भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री, मदर टेरेसा, अरूणा आसफ अलीः– (1909–1996) (भारत छोड़ो आन्दोलन की सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्री), अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, महाश्वेता देवी, अन्नपूर्णा देवी, सोनिया गाँधी, मायावती, इन्दिरा नूई, चंदा कोचर, मेरीकॉम, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, आदि आधुनिक काल की सशक्त नारियों की उदाहरण हैं।

इस प्रकार आज के समय में नारी सभी क्षेत्रों चाहे राजनीति हो, विज्ञान हो, लेखन हो, भारतीय सिनेमा हो, खेल कूद का मैदान हो, सभी में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। हमारे देश में ऐसी हजारों नारियाँ हैं जो देश का नाम रोशन कर रही हैं तथा जिनके ऊपर हमें गर्व है।

भारत में नारीवाद के विभिन्न काल क्रमानुसार विस्तृत विश्लेषण के पश्चात जो बातें सामने आ रही हैं वह इस प्रकार हैं। प्राचीन समय में नारियों की स्थिति काफी अच्छी थी। वे पढ़ी लिखी विदुषी थीं तथा उनके प्रयास एवं प्रेम के कारण ही मनुष्य जीवन अभाव में भी बौद्धिक विकास की पराकाष्ठा पर था तथा विश्व इतिहास में भारत के इस युग को स्वर्ण युग कहा गया है। जैसे–जैसे मनुष्य का विकास भौतिक वस्तुओं के रूप में बढ़ने लगा तथा वह अपने जीवन को आराम दायक तथा बलवान बनाने हेतु कार्य करना शुरू किया तो उसके अन्दर बुराईयों का प्रवेश भी वहीं से आरम्भ हो गया तथा उसकी इस दुर्भावना का शिकार सबसे पहले नारियाँ बनीं तथा वह नारियों को भी अपने जीवन में एक आनन्द भोग या भौतिक वस्तु के रूप में देखने लगा जिसका उदाहरण मध्यकाल में मिलता है वह तमाम बंदिशों शोषण, इसके लिए प्रथाओं का प्रयोग अपने निजी सुख–दुख, झूठी शान, तथा अपने सम्मान के लिए कुर्बान कर दी गई जिसके बौद्धिक विकास का मार्ग रूक गया तथा शारीरिक विकास, राज्य का विस्तार, राज्य का भोग धन

का दुरूपयोग तथा नारी का शोषण अपनी शान एवं बल का प्रतीक बन गया जिसके मूल में आध्यात्मिक शिक्षा का अभाव, धार्मिक आधार पर बिखराव, जातीय आधार पर बँटवारा, अस्पृश्यता आदि बुराईयाँ मुख्य रूप से उत्तरदायी थीं।

पुनः आजादी के उपरान्त देश में नई चेतना आयी तथा नारी स्वतन्त्रता, शिक्षा एवं समानता पर महत्वपूर्ण कार्य किया गया जिसमें सरकार एवं समाज दोनों की भूमिका अहम है। जहाँ गाँधी जी, राजा राम मोहन राय, राधाकृष्णन, आदि सभी दार्शनिकों ने नारी शिक्षा एवं नारी विकास को देश की धुरी माना वहीं इनकी समानता के अधिकार को भी जन्मसिद्ध अधिकार माना गया है तथा इस दिशा में सरकार के प्रयास का नतीजा है कि आज 66 वर्ष में नारी हर क्षेत्र चाहे वह अन्तरिक्ष हो, चाहे पाताल हो, टेक्नोलाजी हो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं परन्तु आज भी समाज में कुछ कुरीतियाँ कुप्रथाएँ हैं जिसे दूर करना शेष है। इस परिप्रेक्ष्य में आज नारी को स्वयं आगे आना होगा। आज नारी स्वयं सक्षम है और वह स्वयं के विकास एवं महत्व को स्थापित करने में अपना योगदान दे सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ :

- ऋग्वेद, पंचम मण्डल, सूक्त–61।
- कात्यायनी (2006), कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त, परिकल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 156।
- करात, वृंदा (2007), जीना है तो लड़ना होगा, सामयिक प्रकाशन, नईदिल्ली, पृष्ठ 9।
- कश्तवार, रेखा (2006), स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, राजकमल, नई दिल्ली पृष्ठ 25।
- गोस्वामी, सुधा, भारत की चर्चित नारियाँ।
- मिल, जॉन स्टुअर्ट, स्त्री और पराधीनता, संवाद प्रकाशन, मेरठ पृष्ठ 104।
- हरिजन (1947),पृ0 79।